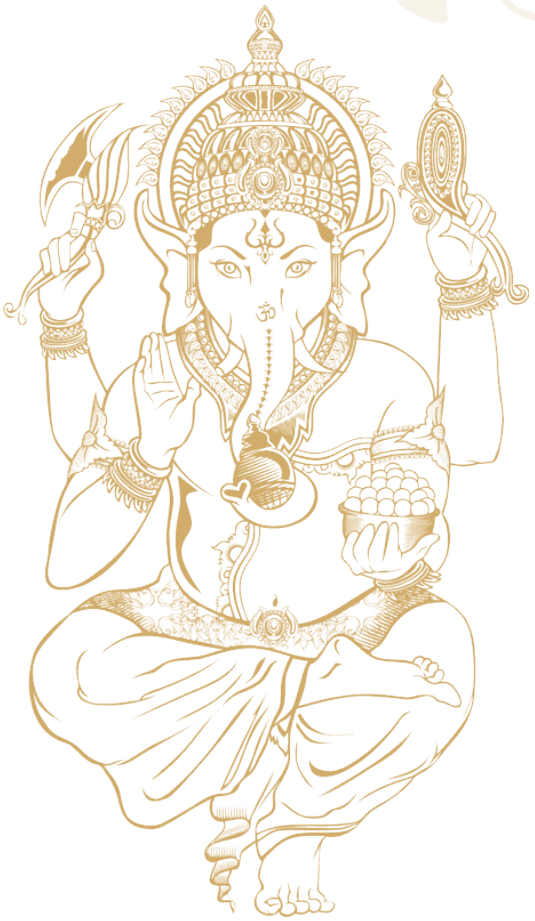

Mr. Anil

Ms. Sangeeta

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120777103

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
16-17/10/1997 :	जन्म तिथि	: 22/05/1997
गुरु-शुक्रवार :	दिन	: गुरुवार
घंटे 03:05:00 :	जन्म समय	: 17:00:00 घंटे
घटी 51:46:19 :	जन्म समय(घटी)	: 28:29:04 घटी
India :	देश	: India
Baran :	स्थान	: Kota
25:08:00 उत्तर :	अक्षांश	: 25:11:00 उत्तर
76:36:00 पूर्व :	रेखांश	: 75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:36 :	स्थानिक संस्कार	: -00:26:08 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:22:28 :	सूर्योदय	: 05:38:48
17:54:46 :	सूर्यास्त	: 19:07:04
23:49:29 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:49:11

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 1वर्ष 8मा 10दि		14:20:06	सिंह	लग्न	तुला	10:47:16	शनि 11वर्ष 3मा 3दि	
चन्द्र		29:43:48	कन्या	सूर्य	वृष	07:35:25	केतु	
27/06/2025		10:06:13	मेष	चंद्र	वृश्चि	08:45:51	25/08/2025	
28/06/2035		18:57:10	वृश्चि	मंगल	सिंह	26:19:01	25/08/2032	
चन्द्र	28/04/2026	01:50:53	तुला	बुध	मेष	12:27:20	केतु	22/01/2026
मंगल	27/11/2026	18:23:35	मक	गुरु	मक	27:34:36	शुक्र	24/03/2027
राहु	28/05/2028	15:37:46	वृश्चि	शुक्र	वृष	20:37:21	सूर्य	30/07/2027
गुरु	27/09/2029	22:33:16	मीन व	शनि	मीन	22:35:18	चन्द्र	28/02/2028
शनि	28/04/2031	25:33:50	सिंह व	राहु व	कन्या	02:48:06	मंगल	26/07/2028
बुध	27/09/2032	25:33:50	कुंभ व	केतु व	मीन	02:48:06	राहु	13/08/2029
केतु	28/04/2033	10:54:51	मक	हर्ष व	मक	14:49:06	गुरु	20/07/2030
शुक्र	27/12/2034	03:22:20	मक	नेप व	मक	06:01:33	शनि	29/08/2031
सूर्य	28/06/2035	10:06:19	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	10:29:30	बुध	25/08/2032

लग्न-चलित

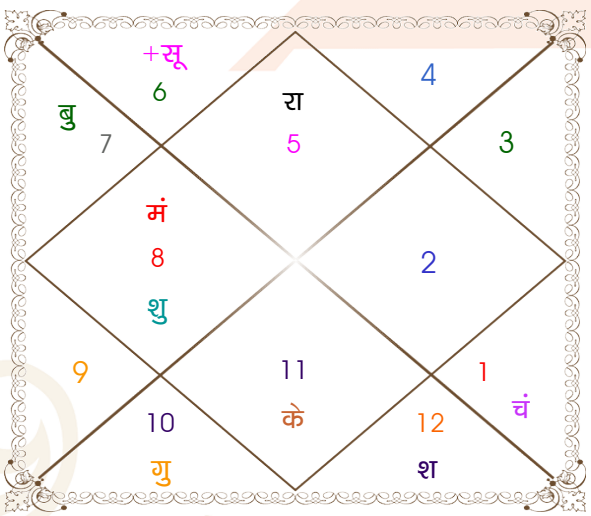

लग्न-चलित

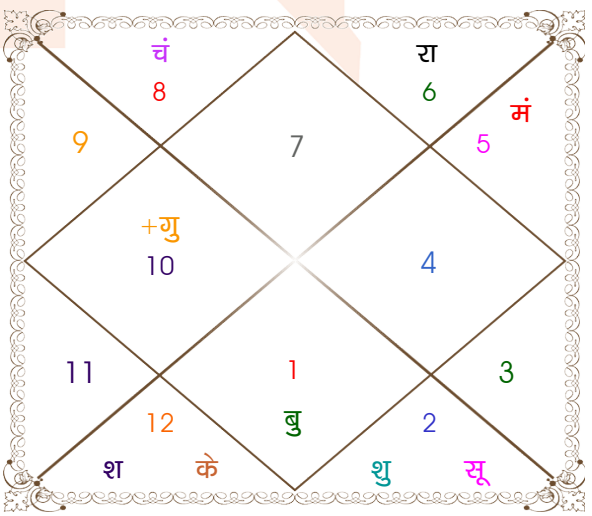

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	कीटक	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	मृग	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	वृश्चिक	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतण ।दपस का वर्ग मृग है तथा डेण ेंदहममजं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण ।दपस और डेण ेंदहममजं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण ।दपस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है। क्योंकि मंगल डतण ।दपस कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण ।दपस कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण ेंदहममजं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण्ैदहममजं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण् ।दपस तथा डेण्ैदहममजं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।